जुलाई 2018

वर्ष : 1 अंक :10

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

संस्थान के जुलाई मास की गतिविधियों में कई विशेष आकर्षण रहे हैं । संस्थान में दिनांक 10 जुलाई को राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस मनाया गया। यह दिवस इस संस्थान के भूतपूर्व वैज्ञानिक, डॉ. हीरालाल चौधुरी तथा डॉ. अलीकुनी के अप्रतिम तकनीक, प्रेरित प्रजनन के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। मेघालय के रबर उगाने वाले किसानों को मत्स्य पालन द्वारा अतिरिक्त आय उपार्जन हेतु प्रशिक्षण दिया गया। यह प्रशिक्षण संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी द्वारा आयोजित किया गया था। संस्थान की वार्षिक गृह पत्रिका नीलांजलि को वर्ष 2016-17 के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद गणेश शंकर विद्यार्थी योजना के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है । राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन परियोजना के अंतर्गत वाइल्ड मछलियों के बीजों का प्रजनन कर इनके 47 लाख पोनों को बालागढ़ में गंगा नदी में डाला गया है। गंगासागर क्षेत्र से आरंभ कर गंगा नदी के 18 सैंपलिंग स्थलों पर मत्स्य प्रजातियों की उपलब्धता के आधार पर जी आईएस मैप बनाया गया है। संस्थान ने दिनांक 9-11 जुलाई 2018 को राष्ट्रिय मात्स्यिकी विकास बोर्ड द्वारा प्रायोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम, "अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालकों के आजीविका सुधार हेतु पालन मात्स्यिकी" का आयोजन पश्चिम बंगाल के पाँच आर्द्रक्षेत्रों में किया गया। जनजाति उप योजना के अंतर्गत सागर द्वीप के मछुआरों के लिए नहर क्षेत्र में मत्स्य पालन हेतु प्रशिक्षण दिया गया जिसका उद्देश्य निष्क्रिय जल निकायों में मछली पालन करना है। इस माह संस्थान में कुछ नए वैज्ञानिको का स्थानान्तरण हुआ हैं उनका स्वागत करता हूँ और उम्मीद करता हूँ कि वे संस्थान की प्रगति में अपना पूरा योगदान देंगे।

विकास

मुख्य शोध उपलब्धियां

- मानसून पूर्व तथा मानसून पश्चात कावेरी नदी में किए गए सर्वेक्षण यह बताते हैं कि इस नदी के निचले क्षेत्र कि उत्पादकता अधिक है। कोलिदाम नदी का औसत उत्पादन 14 कि.ग्रा. प्रति कि.मी. प्रति दिन आँका गया। इस नदी में मछलियों को पकड़ने के लिए ट्रामेल जाल का प्रयोग किया जाता है तथा मत्स्य पकड़ प्रति नाव 3.5 से 12 कि.ग्रा. प्रति दिन आँका गया। औसतन प्रति इकाई मत्स्ययन प्रयास 1.2 से 4 कि.ग्रा. प्रति जाल दर्ज किया गया। इसमें जाल को लगभग 1 से डेढ़ घंटे तक पानी में डुबोए रखा गया। पकड़ी गई मछलियों में *मुगिल सेफालस* 28.98 प्रतिशत, *वलमूगिल बुचनानी* 18.12 प्रतिशत, *मूलगरदा कुनेसियस* 10.14 प्रतिशत, *सेलोंटादे* 7.25 प्रतिशत, *मेगालोप्सी प्रिनोइडस* 5.8 प्रतिशत और *एट्रोप्लस सुरंटेसिस* 4.35 प्रतिशत दर्ज किया गया।
- तिस्ता नदी के विस्तार क्षेत्र IV के पर्यावरणीय प्रवाह का आंकलन साइजोथोरेक्स प्रजाति की मछलियों के आचरण, अभिगमन प्रकृति तथा आहार आदि के परिपेक्ष्य में किया गया। इसमें यह देखा गया कि दिसंबर से जनवरी महीनों के बीच जल का निर्गमन 44.0 क्यूमेक हुआ है।
- *चना पंकटेटा, स्नेकहेड मरेल* प्रजातियों के उत्तरजीविता का आंकलन सरवाइवल मॉडल द्वारा किया गया। इस मॉडल से लगभग 50 प्रतिशत

से अधिक मादा मछलियों के अंडजनन के लिए परिपक्व होने का पता लगाया जा सकता है।

- काठजोड़ी नदी के 110 कि. मी. विस्तार क्षेत्र का सर्वेक्षण यह बताते हैं कि नराज बांध से जल का प्रवाह नियंत्रित होने के कारण कटक से धुलेस्वर के बीच जल प्रवाह बहुत क्षीण होता है। कटक महानगर के अपशिष्ट जल के समावेश के कारण मतगजपुर-इतलंगा के जल का बीओडी बढ़कर 6 पीपीएम हो गया है। इस जल में नाइट्रेट 0.05 पीपीएम तथा फॉस्फेट 0.30 पीपीएम दर्ज किया गया।

- पश्चिम बंगाल के अवशिष्ट जल आधारित चार आर्द्र क्षेत्रों, भोमरा, मथुरा, चंदनिया तथा झगरसिया का सर्वेक्षण किया गया। इस सर्वेक्षण में यह देखा गया है कि झगरसिया बील का नेट प्रारम्भिक उत्पादकता (312.5 मि.ग्रा. कार्बन /मी^{3} /घंटा) दूसरी बीलों, भोमरा (181.25 मि.ग्रा. कार्बन/ मी^{3} /घंटा), मथुरा (225 मि.ग्रा. कार्बन /मी^{3} /घंटा) तथा चंदनिया (118.मि.ग्रा. कार्बन /मी^{3} /घंटा) से अधिक है जिसका कारण क्लोरोफिल कि सांद्रता अधिक होना है।

- राष्ट्रिय स्वच्छ गंगा मिशन परियोजना के अंतर्गत वाइल्ड मछलियों के बीजों का प्रजनन कर इनके 47 लाख पोनों को बालागढ़ में गंगा नदी में डाला गया है।

- गंगासागर क्षेत्र से आरंभ कर गंगा नदी के 18 सैंपलिंग स्थलों पर मत्स्य प्रजातियों की उपलब्धता के आधार पर जी आईएस मैप बनाया गया।

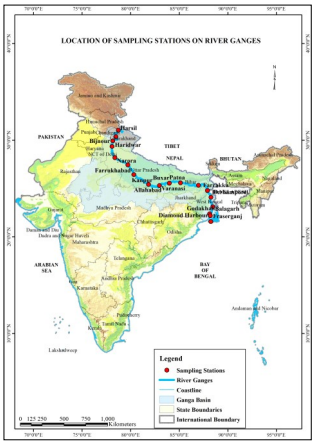

संस्थान द्वारा राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड प्रायोजित किसान कौशल विकास कार्यक्रम

9 जुलाई, 2018 को भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में 9 जुलाई, 2018 को "इनलैंड फिशर्स के आजीविका में सुधार के लिए पालन आधारित मत्स्य पालन" पर तीन दिन के कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। नील क्रांति योजना के तहत मत्स्य

पालको का कौशल विकास कार्यक्रम, भारत सरकार के राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड (एन.एफ.डी.बी.), हैदराबाद, द्वारा प्रायोजित है। प्रशिक्षण का उद्देश्य मत्स्य पालन के विभिन्न पहलुओं और बाढ़कृत मैदानों के विशेष संदर्भ के साथ अन्तर्स्थलीय खुले जल में मत्स्य पालन वृद्धि के लिए उपलब्ध प्रौद्योगिकियों पर मछुआरों को अवगत करवाना है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में पश्चिम बंगाल के नादिया, 24 परगना (उत्तर) और हुगली जिलों के 5 आद्रक्षेत्रो के 50 मछुआरों और किसानों ने भाग लिया।

अपनी शुरुआती टिप्पणी में डॉ. बसन्त कुमार दास, निदेशक, भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, ने सभी किसानों का संस्थान में स्वागत किया और आशा जताई की यह प्रशिक्षण कार्यक्रम उपयोगी होगा। उन्होंने बाढ़कृत मैदानों में व्याप्त पारिस्थितिक तंत्र के निर्माण और उसके सामाजिक लाभों के साथ साथ इनके द्वारा मछुआरों की आजीविका बढ़ाने की क्षमता पर भी जोर दिया। डॉ वी. आर. सुरेश, प्रभाग्याध्यक्ष, नदीय पारिस्थितिकी और मात्स्यिकी विभाग ने अपनी टिप्पणी में कहा कि भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर द्वारा विकसित वैज्ञानिक तकनीको ने पश्चिम बंगाल, असम और बिहार के बाढ़ के मैदानों से मछली उत्पादन में वृद्धि करने की अपनी क्षमता को साबित कर चुका है और किसानों को इन संसाधनों को प्रयोग समझदारी से करने के लिए उचित प्रबंधन करना चाहिए। मत्स्य संसाधन और पर्यावरण प्रबंधन विभाग के प्रमुख डॉ. बी. पी. मोहंती ने किसानों से संस्थान द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम से उपलब्ध जानकारियों को पूर्ण उपयोग कर, क्षमता बढाने के आग्रह किया। डॉ. यू. के. सरकार, प्रभाग्याध्यक्ष, जलाशय और आर्द्रभूमि मात्स्यिकी प्रभाग ने हितधारकों को मछली उत्पादन और उसके द्वारा आजीविका को बढ़ाने के लिए सही वैज्ञानिक प्रबंधन प्रौद्योगिकियों का प्रयोग करने की सलाह दी और प्राकृतिक आर्द्रभूमि संसाधनों का न्यायपूर्वक उपयोग करने की सलाह दी।

राष्ट्रीय मत्स्य-कृषक दिवस का आयोजन

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, ने हमेशा की तरह 10 जुलाई, 2018 को अपने मुख्यालय बैरकपुर, में राष्ट्रीय मत्स्य-किसान दिवस मनाया। इस दिन यानि 10 जुलाई सन 1957 को इस संस्थान के दो वैज्ञानिको डॉ. हीरा लाल चौधुरी और डॉ. अलीकुनी ने प्रेरित प्रजनन तकनीक का अविष्कार किया था। इसी क्रांतिकारी तकनीक की याद में यह दिवस पूरे भारत में मनाया जाता है। इस आयोजन के दौरान सभागार में उपस्थित गणमान्य व्यक्तियो का स्वागत करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. बसन्त कुमार दास ने कहा कि केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ हीरा लाल चौधुरी और डॉ. अलीकुनी ने देश में प्रथम नीली क्रांति

की शुरुआत की थी। डॉ. दास ने यह भी बताया कि पिछले 72 वर्षों से संस्थान ने अनुसंधान के माध्यम से मात्स्यिकी में एक गतिशील ज्ञान का आधार बनाये रखा है और जिसमें संस्थान हमेशा से महत्वपूर्ण योगदान देता आ रहा है। गत

वर्षो से लेकर वर्तमान समय में भी यह संस्थान प्राकृतिक जलीय संसाधनो के प्रबंधन के लिए अनेक महत्वपूर्ण मुद्दों पर काम कर रहा है और आगे भी करता रहेगा। डॉ. ए. एन. रॉय, निदेशक, केन्द्रीय पटसन एवं संवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान (निर्जैफ्ट) ने पश्चिम बंगाल में आजीविका सुरक्षा में मात्स्यिकी की भूमिका पर जोर दिया। जे.आई.एस. समूह विश्वविद्यालय, कल्याणी के कुलपति

प्रोफेसर बी. सी. मॉल, जो इस कार्यक्रम के विशेष अतिथि में रूप में उपस्थित थे, उन्होंने जलीय कृषि में 40 वर्षों से प्रयोगात्मक इंजीनियरिंग के विशेष योगदान के बारे में अपने अनुभव को साझा किया। उन्होंने देश में मछली उत्पादन कि वृद्धि के लिए केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, टीम के वैज्ञानिको के योगदान के लिए बधाई दी। रामकृष्ण विवेकानंद

विश्वविद्यालय बेलूर मठ के उपाध्यक्ष श्री स्वामी अत्मप्रियानंद जी, और समारोह के मुख्य अतिथि, ने प्राकृतिक संसाधनों के द्वारा सभी प्राणियों के लिए भोजन उपलब्ध करने के लिए किसानो की भूमिका पर जोर दिया। अपने संबोधन में

उन्होंने संस्थान द्वारा देश में बील और खुले जल मत्स्य पालन के विकास के लिए किए गए प्रयासों की सराहना की।

इस कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों, पश्चिम बंगाल, बिहार, ओडिशा, झारखंड, उत्तर प्रदेश और छत्तीसगढ़ के लगभग 150 मत्स्य-किसानों ने भाग लिया। पश्चिम बंगाल, ओडिशा, तेलंगाना, झारखंड, बिहार, उत्तर प्रदेश के ग्यारह

मत्स्य-किसानों को मात्स्यिकी और भारत के जलीय कृषि क्षेत्र में उनके योगदान के लिए समारोह में "सर्वश्रेष्ठ मत्स्य-कृषक पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। पुरस्कार विजेताओं ने मत्स्य-पालन में अपना अनुभव भी साझा किया। कौशल विकास कार्यक्रम के क्रियान्वयन के लिए पश्चिम बंगाल के आद्रभूमि में कार्यरत मत्स्य-किसानों और सुंदरबन के आदिवासी मत्स्य-

किसानों को जनजातीय उप योजना के तहत दो प्रशिक्षण कार्यक्रम द्वारा प्रशिक्षित किया गया। संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. ए. के. दास ने इस कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद -प्रस्ताव पेश किया।

"नहर मत्स्य विकास" में सागर द्वीप के जनजातीय मछुआरों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने जनजातीय उप योजना के तहत सागर द्वीप, पश्चिम बंगाल से तीन महिलाओं सहित कई मछुआरा समुदाय के 20 सदस्यों के लिए "नहर मत्स्य विकास" पर बैरकपुर, कोलकाता में चार दिन (09-12 जुलाई 2018) का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया ताकि मत्स्य पालन के लिए पूर्ण स्तर पर अप्रयुक्त नहरों का

उपयोग करने के उपायों को बताया जा सके। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. बी. के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, ने किया और उन्होंने मछुआरों को इन नहरों से मछली उत्पादन बढ़ाने

और अपनी आजीविका में सुधार करने की सलाह दी, साथ ही साथ मछुआरों को यह भी सुनिश्चित करने को कहा गया की तकनीकी सेवा के लिए भाकृअनुप-

केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान हमेशा उनके लिए उपलब्ध रहेगा। जनजातीय किसानों की आवश्यकता का आकलन करने के बाद एक संरचित प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार किया गया ताकि नहर मत्स्य पालन के विभिन्न पहलूओ जैसे नहरों में मछली उत्पादन में वृद्धि, प्राकृतिक मछली खाद्य जीव, एकीकृत मछली पालन का दायरा, मछली खाद्य की तैयारी और खाद्य रणनीति, मछली रोग प्रबंधन और उपलब्ध सर्वोत्तम प्रबंधन प्रथाओं, मिट्टी और जल की गुणवत्ता का प्रबंधन आदि पर विचार विमर्श किया जा सके। स्थानीय भाषा "बंगाली" में "नहर मत्स्य विकास" पर एक प्रशिक्षण पुस्तिका प्रशिक्षुओं को वितरित भी कि गयी । डॉ. वी. आर. सुरेश, प्रभागाध्यक्ष; डॉ. बी. पी. मोहंती, प्रभागाध्यक्ष, डॉ. यू. के. सरकार, प्रभागाध्यक्ष और डॉ. ए. के. दास, प्रभारी प्रशिक्षण कक्ष ने मछुआरों को मछली उत्पादन और उनकी आजीविका में सुधार के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्राप्त ज्ञान का उपयोग करने की सलाह दी। प्रशिक्षण भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, की उप जनजातीय कार्यक्रम .- टीम' - डॉ. पी. के. पारिडा, डॉ अपर्णा रॉय, डॉ लिआनथुमलिया, डॉ संजय भौमिक, श्री सी. एन. मुखर्जी और श्री एस. मंडल द्वारा समन्वित किया गया।

'रबड़ उत्पादकों के लिए मत्स्यपालन के माध्यम से उत्पादकता में वृद्धि और अतिरिक्त आय उत्पादन' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम।

रबड़ बोर्ड क्षेत्रीय कार्यालय (आर.बी. आर.ओ.), गुवाहाटी द्वारा प्रशिक्षण

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के सहयोग से मेघालय के री-भोई जिले में 'उत्पादकता में वृद्धि और रबर उत्पादकों के लिए अतिरिक्त आय उत्पादन' पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम 18 जुलाई 2018 को संरक्षण प्रशिक्षण संस्थान (सी.टी.आई.), बिरनिहाट, मेघालय में किसानों के लिए आयोजित किया गया। मेघालय के री-भोई जिले

के रबर उत्पादकों के अधिकांश, जल निकायों में (यानी, तालाबों के विभिन्न आकार) उचित रूप से जलीय कृषि के लिए उपयोग नहीं किया जाता रहा है। इस एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य यहाँ के किसानों के एक

हिंदी पत्रिका "नीलांजली" को वर्ष 2016-2017 के लिए गणेश शंकर विद्यार्थी हिंदी पत्रिका प्रथम पुरस्कार

संस्थान से प्रकाशित हिंदी वार्षिक पत्रिका "नीलंजली" को इस वर्ष (2016-2017) के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, दिल्ली, द्वारा

दिया जाने वाला "गणेश शंकर विद्यार्थी हिंदी पत्रिका पुरस्कार" (प्रथम पुरस्कार) मिला। यह पुरस्कार हिंदी पत्रिका "नीलंजली" को दूसरी बार प्राप्त हुआ है | नीलांजली ने अपने प्रथम प्रकाशन के वर्ष 2011 में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के "गणेश शंकर विद्यार्थी हिंदी पत्रिका पुरस्कार" को प्राप्त किया था। इस वर्ष यह पुरस्कार माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधामोहन सिंह जी एवं माननीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत जी के कर कमलो द्वारा, डॉ. टी. महापात्र, सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग और महानिदेशक, भाकृअनुप, नई दिल्ली, एवं श्री छबिलेन्द्र राउल, विशेष सचिव (कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग) और सचिव (भाकृअनुप) की उपस्थिति में डॉ. बसन्त कुमार दास , निदेशक , भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और सुश्री सुनीता प्रसाद, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी

ने प्राप्त किया दूसरी बार इस पुरस्कार के प्राप्त होने से संस्थान अपने हिन्दी के कार्यो के प्रति गौरान्वित महसूस कर रहा है। नीलंजली पत्रिका का संपादक मण्डल एवं सलाहकार मण्डल पुरस्कार प्राप्त होने से सभी पाठकों लेखको एवं विचारकों का धन्यवाद देता है।

नीलांजलि: एक परिचय

नीलांजलि भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान की प्रथम हिन्दी ग्रह पत्रिका है, जिसका प्रकाशन तत्कालीन निदेशक डॉ. अनिल प्रकाश शर्मा के मार्गदर्शन एवं सहयोग में प्रारम्भ हुआ। इस पत्रिका की परिकल्पना एवं इसके मूर्त रूप को साकार करने का श्रेय संस्थान के पूर्व प्रधान वैज्ञानिक एवं संस्थान में विविध हिन्दी कार्यकलापों के पथप्रदर्शक, डॉ. नर्वदा प्रसाद श्रीवास्तव को जाता है । । इस पत्रिका की सलाहकर समिति सदस्य के रूप में डॉ. पी. एल. गौतम,अध्यक्ष, पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण, नई दिल्ली; डॉ. एस. एच. आबिदी, पूर्व निदेशक, केन्द्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान, मुंबई एवं सदस्य, कृषि वैज्ञानिक भर्ती बोर्ड, नई दिल्ली; डॉ. आर. के. सिन्हा, विभागाध्यक्ष, जीव विज्ञान, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, पटना; डॉ. कृपा शंकर चौबे, वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार, एसोसिएट प्रोफेसर, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विद्यालय तथा संस्थान के पूर्व निदेशकों, डॉ. के. के. वास, डॉ. एम. सिन्हा, आदि गणमान्य एवं बुद्धिजीवी शामिल है। प्रथम अंक को तत्कालीन सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग और महानिदेशक, भाकृअनुप, नई दिल्ली डॉ. एस. अयप्पन, उप महानिदेशक, भाकृअनुप, नई दिल्ली डॉ. बी. मीनाकुमारी संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ. के. के. वास, डॉ. मणिरंजन सिन्हा, डॉ. वी. आर. देसाई आदि के आशीर्वचन प्राप्त हुये। इसके अलावा मात्स्यिकी के अन्य प्रबुध वैज्ञानिक डॉ. एस. एन. द्विवेदी, डॉ. वी.वी. सुगुणन, डॉ. वी. आर चित्रांशी डॉ. पी. सी. महंता आदि इस पत्रिका का मार्ग दर्शन करते रहे हैं। नीलांजलि में सामाजिक, समसामयिक, विज्ञान, कृषि विज्ञान, मात्स्यिकी आदि विषयों के लेख, कविताये वैज्ञानिकों, छात्रों, लेखको, संस्थान के कर्मचारियों द्वारा प्रकाशित की जाती है। अभी तक नीलांजली के आठ अंक पस्तुत किये जा चुके है। इस पत्रिका में हिन्दी साहित्य के जाने माने विद्वान् जैसे कि महाश्वेता देवी, वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार डॉ. कृपाशंकर चौबे, विभिन्न कृषि एवं मत्स्यिकी संस्थानों के निदेशक, पूर्व निदेशक एवं सहायक महानिदेशक आदि अपने लेख एवं कवितायेँ देते रहते है। आगे आने वाले अंको में शोध, साहित्य एवं सामाजिक विषयो पर पाठको हेतु उत्तम लेख एवं कवितायेँ प्रस्तुत की जायेगी। संपादक मण्डल का संकल्प और प्रयास रहेगा कि नीलांजलि को अधिकाधिक वर्गों तक पहुचाया जा सके।

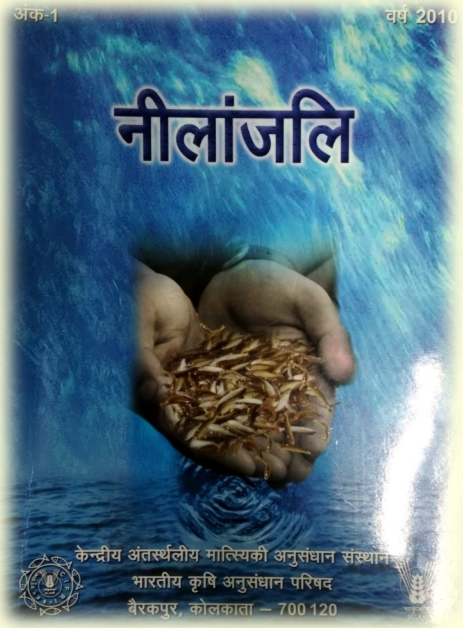

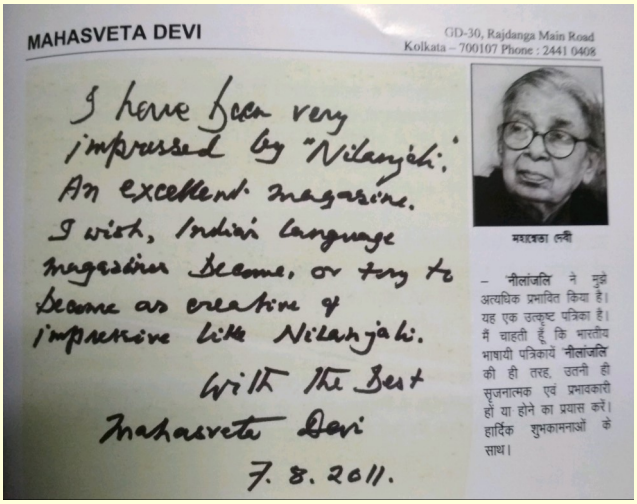
MAHASVETA DEVI

GD-30, Rajdanga Main Road
Kolkata – 700107 Phone : 2441 0408

I have been very impressed by "Nilanjali". An excellent magazine. I wish, Indian language magazines become, or try to become as creative & impressive like Nilanjali.

With the Best
Mahasveta Devi
7. 8. 2011.

महाश्वेता देवी

– 'नीलांजलि' ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया है। यह एक उत्कृष्ट पत्रिका है। मैं चाहती हूँ कि भारतीय भाषायी पत्रिकायें 'नीलांजलि' की ही तरह, उतनी ही सृजनात्मक एवं प्रभावकारी हों या होने का प्रयास करें। हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

समूह को वैज्ञानिक तरीके से उन जल निकायों में मत्स्य-पालन पद्धति अपनाने के लिए प्रशिक्षित करना था। श्री के. सुरेश बाबू, विकास अधिकारी, आर.बी. आर.ओ., गुवाहाटी ने मेहमानों, आमंत्रितों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। आर.बी. आर.ओ., गुवाहाटी के अन्य कर्मचारियों के साथ श्री एस. बालकृष्ण, विकास अधिकारी और सुश्री नंदिनी गौतम, फील्ड ऑफिसर और भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के डॉ दीपेश देवनाथ और श्रीमती नीती शर्मा, वैज्ञानिकों, की उपस्थिति में प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन सी.टी.आई. के संयुक्त निदेशक श्री डी. शल्लम ने किया। अपने उद्घाटन संबोधन में, सी.टी.आई. के संयुक्त निदेशक ने किसानों से प्रशिक्षण कार्यक्रम का अत्यधिक लाभ लेने का आग्रह किया ताकि अतिरिक्त आय अर्जित करने के लिए उपलब्ध जल संसाधनों का उचित उपयोग किया जा सके। तकनीकी सत्र में डॉ. देवनाथ ने जलीय कृषि के बुनियादी सिद्धांतों और प्रथाओं को समझाया और जलीय कृषि के विभिन्न पहलुओं पर किसानों से बातचीत की। श्रीमती शर्मा ने स्पष्ट रूप से मछली के बीजो के उत्पादन और नर्सरी पालन पर विस्तार से बताया। भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के अन्य वैज्ञानिकों ने बड़े जल निकायों में बाढ़े और पिंजरे में जलीय कृषि की संभावनाओं को भी समझाया। श्री बालकृष्ण ने संक्षेप में रबर की खेती की व्याख्या की। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 20 किसानों ने भाग लिया और जलीय कृषि से संबंधित प्रश्न उठाए। सुश्री नंदिनी गौतम ने डॉ बसन्त कुमार दास, निदेशक, और डॉ बीरेंन कुमार भट्टाचार्ज्य, विभाग्यक्ष, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी, भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। दो मत्स्यपालन वैज्ञानिकों को री-भोई जिले के रबर उत्पादकों के साथ मत्स्य पालन और जलीय कृषि के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करने के लिए संसाधन व्यक्ति के रूप में नामांकित करने की अनुमति भी मांगी गयी।

बैठक

दिनांक 17 जुलाई 2018 को भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और कलपसर विभाग, गुजरात सरकार के बीच गांधीनगर में परामर्शी परियोजनायें, नर्मदा नदी पर बने भाड्रुत बेराज परियोजना “अस्सेस्मेंट एंड इम्पैक्ट स्टडी ऑन बायोडायवर्सिटी, इको -हाइड्रोलॉजी, फिश पापुलेशन डायनामिक्स एंड लाइवलीहुड ऑफ़ फिशर्स इन नर्मदा रिवर विद स्पेसिअल फोकस ऑन डाउनस्ट्रीम ऑफ़ सरदार सरोवर डेम एंड भाड्रुत रिसर्वर ” लिये कार्य योजना के समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुआ।

दिनांक 19 जुलाई 2018 को भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और मात्स्यिकी निदेशालय, ओड़ीशा सरकार के बीच भुवनेश्वर में पिंजरे में मछली पालन करने के लिए पिंजरा स्थापित करने संबंधी कार्य योजना के समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुआ।

दिनांक 19 जून 2018 को भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और मात्स्यिकी निदेशालय, ओड़ीशा सरकार के बीच भुवनेश्वर में वर्ल्ड फिश संगठन के साथ जलाशयों में मत्स्य उत्पादन संवर्धन तथा जीआईएस योजना कक्ष बनाने संबंधी कार्य योजना के समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुआ।

दिनांक 29-30 जून 2018 को भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के निदेशक ने शिक्षा-ओ-अनुसंधान विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर में आयोजित ‘एग्री विकास 2018 ’ के मात्स्यिकी, डेयरी तथा प्राणी विज्ञान सत्र की अध्यक्षता की।

दिनांक 3-5 जुलाई 2018 के बीच भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान तथा वर्ल्ड फिश संगठन-ओड़ीशा के बीच एक बैठक हुई जिसका उद्देश्य ओड़ीशा राज्य के 110 जलाशयों में पेन क्षेत्र में मछली पालन करने के लिए पिंजरा स्थापित करना है। साथ ही, बड़े जलाशयों में चक्रीय पिंजरों को लगाना है जिनमें उपयुक्त मत्स्य प्रजातियों का पालन किया जा सके।

दिनांक 11 जुलाई 2018 को भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने राज्य परियोजना निदेशक, एआरआईएएस सोसायटी (ARIAS Society), असम सरकार के साथ एक जी.आई.एफ.टी. रिस्क मैनेजमेंट संबंधी परामर्शी परियोजना पर संस्थान द्वारा प्रस्तावित योजना पर बैठक की।

दिनांक 13 जुलाई 2018 को भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने चिलिका और तांपरा में सुभद्रापुर मत्स्यपालन पर डीपीआर तैयार करने हेतु एक बैठक में भाग लिया।

दिनांक 16 जुलाई 2018 को भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के स्थापना दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह में भाग लिया ।

दिनांक 16 जुलाई 2018 को भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने संस्थान के संवर्ग निर्धारण (कैडर स्ट्रेन्थ) पर बैठक में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, पूसा नई दिल्ली में भाग लिया।

दिनांक 17 जुलाई 2018 को भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने प्रशासनिक महाविद्यालय, खानपरा, गुवाहाटी में कृषि, बागवानी एवम मात्स्यिकी के पुनरीक्षण बैठक में भाग लिया।

दिनांक 17-18 जुलाई 2018 को भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने भुवनेश्वर, ओड़ीशा में वर्ल्ड फिश सेंटर की बैठक में भाग लिया।

सम्मान

सर्वश्रेष्ठ प्रशासनिक अधिकारी पुरस्कार

संस्थान के वरिष्ठ वित्त एवं लेखा अधिकारी श्री एन. वी. आर. एन. मूर्ति को उनके उत्कृष्ट कार्यो के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, दिल्ली , द्वारा सर्वश्रेष्ठ प्रशासनिक अधिकारी के पुरस्कार से सम्मानित किया गया

प्रशिक्षण

दिनांक 29 जून 2018 को भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने कर्नाटक के रायचूर जिले में जनजातिय उप योजना के अंतर्गत आदिवासी मछुवारों के लिए जलाशय मात्स्यिकी प्रबंधन पर एक जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया।

दिनांक 29-30 जून 2018 को भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने शिक्षा-ओ-अनुसंधान विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर में आयोजित 'एग्री विकास 2018 ' में भाग लिया।

संस्थान ने दिनांक 9-12 जुलाई 2018 को जनजातिय उप योजना के अंतर्गत पश्चिम बंगाल के सुंदरबन में आदिवासी मछुआरों के कौशल विकास के लिए "सुंदरबन में नहर मात्स्यिकी का विकास" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें 25 मछुआरों को नहर मात्स्यिकी के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण दिया गया।

संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र, बंगलोर द्वारा "इलेक्ट्रोनिक डाटा ऐक्यूजिसन सिस्टम (इ-डास)" पर तेलंगाना मात्स्यिकी विभाग के 2 अधिकारियों के लिए दिनांक 20-21 जुलाई 2018 को हैदराबाद, तेलंगाना में दो दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।

दिनांक 6 जुलाई 2018 को श्री संदीप सुल्तानिया, सचिव, पशुपालन, डेयरी विकास एवं मात्स्यिकी; श्री कल्याण कुमार, माननीय मंत्री (मात्स्यिकी) के विशेष अधिकारी, तेलंगाना सरका,र ने संस्थान का दौरा किया तथा संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों के साथ जलाशय मात्स्यिकी विकास, पिंजरे में मछली पालन एवं अन्य विकास संबंधी पहलुओं पर विस्तृत तौर पर विचार विमर्श किया।

संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र, बंगलोर में दिनांक 10 जुलाई, 2018 को डॉ. एम जे चन्द्र गौड़ा, निदेशक, कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, बेंगलुरु ने संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र, बेंगलुरु का दौरा किया तथा संस्थान के वैज्ञानिकों के साथ मात्स्यिकी विकास आदि विषयों पर विस्तृत चर्चा की।

स्थानांतरण

दिनांक 13 जुलाई, 2018 को सुश्री संध्या के, एम. वैज्ञानिक, को उनके स्थानान्तरण के अवसर पर सिफरी मनोरंजन क्लब की तरफ से विदाई दी गयी। इस अवसर पर सिफरी मनोरंजन क्लब के सभी सदस्यों ने उनके द्वारा शोध कार्यो और विभिन्न खेल कूद प्रतियोगिता में अर्जित उप्लब्धियों को याद किया। सदस्यों ने उनके उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाये दी। इस माह संस्थान से सुश्री संध्या के, एम. वैज्ञानिक का स्थानान्तरण इस संस्थान से भाकृअनुप-केंद्रीय मात्स्यिकी प्रोद्योगिकी संस्थान, कोचीन को हुआ।

दिनांक 9 जुलाई 2017 श्री लोहित कुमार, वैज्ञानिक, का स्थानान्तरण भाकृअनुप-केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान, पोर्ट ब्लेयर, से भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान में हुआ । श्री लोहित कुमार, का ए.आर. एस. विषय मात्स्यिकी संसाधन प्रबंधन है और वर्तमान मे संसथान के कोलकाता केंद्र पर कार्यरत है।

इसी माह श्रीमती चायना जाना , वैज्ञानिक का स्थानान्तरण भाकृअनुप-भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण, देहरादून से भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में हुआ। श्रीमती जाना का ए.आर. एस. विषय कृषि सांख्यिकी हैऔर वर्तमान मे नदीय पारिस्थितिकी और मत्स्य पालन विभाग मै कार्यरत है।

भाकृअनुप -भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान, रांची के सहायक वित्त एवं लेखा अधिकारी का स्थानान्तरण भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में परिषद् द्वारा किया गया

नयी बहाली

सुश्री सुकन्या सोम, वैज्ञानिक की तैनाती 30 जुलाई, 2018, को भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान में बैरकपुर में कार्यभार ग्रहण किया । सुश्री सोम का ए.आर. एस. विषय कृषि विस्तार है।

सेवानिवृत्ति

इस माह संस्थान से श्री शीतला प्रसाद, कुशल सहायक कर्मचारी संस्थान के इलाहबाद क्षेत्रीय केंद्र, से सेवानिवृत्त हुए। श्री प्रसाद ने अपने कार्य काल में अपने कार्य को पूरी निष्ठा से अंजाम दिया सभी वैज्ञानिको ने विदाई समारोह पर श्री प्रसाद के कार्य की भूरी-भूरी प्रशंसा की।

सम्पादक मंडल की तरफ से

संस्थान की जुलाई, 2018 माह का मासिक समाचार पत्र आपके समक्ष प्रस्तुत है । प्रस्तुत अंक में संस्थान में हुई समस्त कार्यक्रमों की विस्तृत जानकरियाँ प्रस्तुत हैं। सभी स्थान्तरित वैज्ञानिकों एव कर्मचारियों का संस्थान मे स्वागत है। इस वर्ष देश में वर्षा के स्वरुप में परिवर्तन होने के कारण कई राज्यों में सामान्य से ज्यादा वर्षा होने के कारण बाढ़ की स्थिति बन गयी है और जान माल का बहुत नुकसान हुआ है। हमारी संवेदना उन सभी देशवासियों के साथ है। राष्ट्रीय मत्स्य कृषक दिवस के अवसर पर "मत्स्य-किसान पुरस्कार " से सम्मानित सभी विजेताओ को बधाई। सम्पादन मण्डल की सदैव यह कोशिश रहती है कि इस पत्रिका को अधिक से अधिक आकर्षक और विविधपूर्ण बनाया जाय और इसके लिए आपके सुझाव अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। अतः इस पत्रिका को ओर भी आकर्षक एवं उत्कृष्ठ बनाने में आप सभी के सुझावों का स्वागत हैं।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक, संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र

संकलन एवं सम्पादन सहायता: मो. कसिम एवं सुनीता प्रसाद, फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2008 प्रमाणित संगठन) बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120 भारत दूरभाष: 91-33-25921190/91 फैक्स: 913325920388 ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है